GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

हिंदी पत्रकारिता में महिला पत्रकारों का योगदान

डॉ. भारती शर्मा
असोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग,
आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद मारकण्डा, कुरुक्षेत्र (हरियाणा)
ई मेल:- bharthisharma0286@gmail.com, मोबाइल नंबर:- 9416562931

सारांश

पत्रकारिता समाज का दर्पण है और हिंदी पत्रकारिता ने भारतीय समाज में जन-जागरण, स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक सुधार तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस यात्रा में महिला पत्रकारों की उपस्थिति ने पत्रकारिता को संवेदनशीलता, गहराई और मानवीय दृष्टिकोण प्रदान किया। प्रारंभिक दौर में पत्रकारिता पुरुष-प्रधान क्षेत्र माना जाता था, किंतु महिला शिक्षा के प्रसार के साथ महिलाओं ने लेखन और पत्रकारिता में कदम रखा।हिंदी पत्रकारिता के विकास में महिला पत्रकारों का योगदान ऐतिहासिक, वैचारिक और परिवर्तनकारी रहा है। 1888 में हेमंत कुमारी देवी द्वारा *सुगृहिणी* के संपादन से आरंभ होकर यह यात्रा आज के डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया तक फैली हुई है। महिला पत्रकारों ने हिंदी पत्रकारिता को नई विषय-वस्तु, संवेदना, भाषा और सामाजिक दृष्टि प्रदान की। उन्होंने न केवल स्त्री-प्रश्नों को, बल्कि सामाजिक न्याय, स्वास्थ्य, शिक्षा, लैंगिक असमानता और लोकतांत्रिक विमर्श को भी पत्रकारिता का विषय बनाया। फिर भी प्रतिनिधित्व की कमी, कार्यस्थलीय चुनौतियाँ और संस्थागत अवरोध आज भी महिला पत्रकारिता के सामने बड़ी चुनौतियाँ हैं।

बीज शब्द: महिला पत्रकारिता, हिंदी पत्रकारिता, महिला पत्रकार, स्त्री-विमर्श, मीडिया प्रतिनिधित्व, सुगृहिणी, हेमंत कुमारी देवी, महिला-केंद्रित पत्रिकाएँ।

1. प्रस्तावना

पत्रकारिता को लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है। यह समाज का दर्पण है — किंतु यह दर्पण तभी विश्वसनीय और समग्र बन सकता है, जब उसमें समाज के सभी वर्गों की आवाज़ शामिल हो। हिंदी पत्रकारिता का इतिहास 1826 में *उदंत मार्तंड* के प्रकाशन से आरंभ होता है, किंतु इस इतिहास में महिलाओं की उपस्थिति लंबे समय तक नगण्य रही। सामाजिक संरचना, पितृसत्तात्मक मान्यताएँ और शिक्षा की कमी ने महिलाओं को सार्वजनिक लेखन

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

और संपादन से दूर रखा , लेकिन धीरे-धीरे महिलाओं ने भी इस क्षेत्र में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। उन्होंने न केवल सामाजिक मुद्दों को उठाया, बल्कि पत्रकारिता को संवेदनशीलता, गहराई और मानवीय दृष्टिकोण प्रदान किया।

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध से महिलाओं ने हिंदी पत्रकारिता में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया और धीरे-धीरे इस पुरुष-प्रधान क्षेत्र में अपनी उपस्थिति और योगदान दर्ज कराया। उनका यह योगदान केवल संख्यात्मक नहीं, बल्कि गुणात्मक और वैचारिक भी है। महिला पत्रकारों ने हिंदी पत्रकारिता की विषय-वस्तु को विस्तृत किया, उसकी भाषा को संवेदनशील बनाया और पाठकों तक ऐसे प्रश्न पहुँचाए जिन्हें मुख्यधारा मीडिया प्रायः अनदेखा करता था।

2. शोध उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं:

1. हिंदी पत्रकारिता में महिला पत्रकारों की ऐतिहासिक भूमिका का अध्ययन करना
2. महिला-केंद्रित पत्रिकाओं में महिला पत्रकारों के योगदान का विश्लेषण करना
3. प्रमुख महिला पत्रकारों के कार्यों का मूल्यांकन करना
4. मीडिया संस्थानों में महिलाओं के प्रतिनिधित्व और चुनौतियों की पड़ताल करना
5. भविष्य की हिंदी पत्रकारिता में महिला पत्रकारों की संभावनाओं का आकलन करना

3. हिंदी पत्रकारिता में महिला उपस्थिति: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

3.1 प्रारंभिक महिला पत्रकारिता

भारतीय पत्रकारिता के इतिहास में महिलाओं की प्रारंभिक उपस्थिति अत्यंत सीमित रही। बालकृष्ण भट्ट, बदरीनारायण चौधरी और राधाचरण गोस्वामी जैसे विद्वान पुरुषों के बीच जब किसी महिला ने पत्रिका निकाली, तो यह हिंदी नवजागरण की एक ऐतिहासिक घटना बन गई।

हेमंत कुमारी देवी को हिंदी पत्रकारिता की पहली महिला पत्रकार एवं संपादिका माना जाता है। वर्ष 1888 में उन्होंने '*सुगृहिणी* ' नामक स्त्री पत्रिका नागरी भाषा में निकाली। इस पत्रिका के माध्यम से उन्होंने उस रूढ़िवादी दौर में नारी शिक्षा और महिला सशक्तिकरण की मजबूत नींव डाली। यह पत्रिका सुखसंवाद प्रेस, लखनऊ में पंडित बिहारी लाल द्वारा मुद्रित होती थी। पत्रिका का पहला अंक फरवरी 1888 में प्रकाशित हुआ था। इसमें बारह पृष्ठ होते थे और पहला तथा अंतिम पृष्ठ रंगीन होता था। उल्लेखनीय है कि हेमंत कुमारी देवी मूलतः बांग्लाभाषी थीं, किंतु हिंदी के प्रति उनका अनुराग विशेष था। गैर-हिंदी भाषी महिला द्वारा इस तरह की पत्रिका निकालना एक बहुत बड़ी और अभूतपूर्व घटना

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

थी। जिस समय उन्होंने पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया, उनकी आयु मात्र बीस वर्ष थी, इसलिए उन्हें देश की सबसे कम उम्र की महिला संपादक भी कहा जा सकता है।

'*सुगृहिणी*' से पहले हिंदी में कोई ऐसी पत्रिका नहीं थी जिसका संपादन कोई स्त्री करती हो। यह पत्रिका पुरुषवादी सामाजिक संहिता के विरुद्ध थी और स्त्रियों को उनकी परंपरा से जोड़ते हुए उनकी बौद्धिक क्षमता को सिद्ध करती थी। '*सुगृहिणी*' के बाद 1889 में श्रीमती हरदेवी की पत्रिका '*भारत भगिनी*' प्रकाशित हुई।19वीं सदी का उत्तरार्ध स्त्री चिंतन की दृष्टि से अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इस समय में हेमंत कुमारी देवी के साथ-साथ पंडिता रमा बाई, श्रीमती हरदेवी और रामेश्वरी नेहरू का पदार्पण हुआ।

इस प्रकार उन्नीसवीं सदी की भारतीय महिला पत्रकारों और लेखिकाओं ने पत्रकारिता की दुनिया में एक 'मूकदर्शक' की छवि तोड़कर सामाजिक सुधारों और राष्ट्रीय चेतना की अलख जगाई। उस रूढ़िवादी युग में, जब महिलाओं के लिए घर से बाहर निकलना वर्जित था, उनकी लेखनी ने भारतीय समाज और पत्रकारिता की दिशा को गहराई से प्रभावित किया। भारतीय पत्रकारिता लेखन के क्षेत्र में महिलाओं ने बहुत महत्वपूर्ण और साहसिक कदम उठाए। कई दूरदर्शी महिलाओं ने समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का संपादन करके महिलाओं के अधिकारों, शिक्षा और सामाजिक जागरूकता की आवाज उठाई।

3.2 राष्ट्रीय आंदोलन में महिला पत्रकार

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी महिला पत्रकारों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। ऐनी बेसेंट का नाम इस संदर्भ में विशेष रूप से उल्लेखनीय है। अखिल भारतीय कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष रहीं ऐनी बेसेंट अपने समय की अत्यंत जागरूक महिला थीं। उन्होंने जनवरी 1914 में अंग्रेजी के साप्ताहिक पत्र '*कॉमनवील*' (अर्थात् लोकहित) की स्थापना की। इस प्रकार भारतीय महिला पत्रकारिता का एक महत्त्वपूर्ण सूत्र एक अंग्रेज महिला के प्रयासों से आरंभ हुआ।

सरोजिनी नायडू एक पत्रकार के रूप में भले ही कम चर्चित हों, किंतु उनके राष्ट्रीय लेखन ने उन्हें एक प्रभावशाली सार्वजनिक व्यक्तित्व बनाया। आज भी सरोजिनी नायडू की स्मृति में उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए पुरस्कार दिया जाता है।

3.3 स्वातंत्र्योत्तर महिला पत्रकारिता

भारत की आजादी के बाद राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों ने महिलाओं के लिए नए अवसर खोले। इस क्रम में महिलाएँ पत्रकारिता के क्षेत्र में भी अपनी पहचान स्थापित करने लगीं। विद्या मुंशी को भारत की पहली

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

प्रमुख महिला पत्रकार माना जाता है। मुंबई में जन्मी विद्या ने अनेक समाचार पत्रों-पत्रिकाओं में सेवाएँ दीं। 1952-62 के बीच वे रूसी करंजिया के चर्चित अखबार '*ब्लिट्ज*' की कलकत्ता संवाददाता रहीं। उन्होंने उस समय सरकार की नीतियों पर प्रभावी लेखन किया और खोजी पत्रकारिता के माध्यम से तस्करी और अवैध उत्खनन जैसे कई स्कूप उजागर किए।

4. प्रमुख महिला पत्रकार और उनका योगदान

हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में अनेक महिला पत्रकारों ने उल्लेखनीय योगदान दिया। कुछ प्रमुख नामों का विवरण निम्नानुसार है:

विमला पाटिल: भारतीय महिला पत्रकारों में विमला पाटिल का नाम सम्मान से लिया जाता है। वे संभवतः पहली महिला थीं जिन्होंने '*द टेलीग्राफ*' से जुड़कर लेखक, स्तंभकार और पत्रकार के रूप में अपना कैरियर शुरू किया। 1959 से 1993 तक वे लगातार संपादक और महत्त्वपूर्ण पदों पर रहीं। उन्होंने टाइम्स ग्रुप की पत्रिका '*फेमिना* 'को भी एक ब्रांड के रूप में स्थापित कराया।

मृणाल पांडे: हिंदी पत्रकारिता के क्षेत्र में मृणाल पांडे एक ब्रांड के रूप में उभरीं। उन्होंने उस वक्त संपादक की कुर्सी संभाली जब इस पेशे में महिलाओं का औसत और भी नगण्य था। वे साप्ताहिक *हिन्दुस्तान* से लेकर दैनिक *हिन्दुस्तान* के संपादकीय दायित्व को पूरी निष्ठा के साथ निभाती रहीं। बाद में वे प्रसार भारती की चेयरमैन भी रहीं।

नीरजा चौधरी: नीरजा चौधरी आज दिल्ली में स्थित महिलाओं के प्रेस क्लब से जुड़ी हैं। उन्होंने साठ के दशक में मुंबई के '*हिम्मत* ' अखबार से अपनी यात्रा शुरू की। वह भारतीय पत्रकार, स्तंभकार और राजनीतिक टिप्पणीकार हैं। चौधरी दस वर्षों तक इंडियन एक्सप्रेस की राजनीतिक संपादक रहीं और वर्तमान में इंडियन एक्सप्रेस के लिए एक योगदान संपादक हैं ।

चित्रा सुब्रमण्यम: भारतीय महिला पत्रकारिता में चित्रा सुब्रमण्यम पुरुष-प्रधान इस पेशे में एक प्रभावशाली नाम हैं, जिन्होंने अपनी खोजी पत्रकारिता से पत्रकारिता में महिला प्रभुत्व को स्थापित किया। बोफोर्स कांड को उजागर करने वाली चित्रा सुब्रमण्यम ने जनसंचार में डिग्री-डिप्लोमा हासिल कर *इंडिया टुडे* ज्वाइन की। द *हिंदू*, *इंडियन एक्सप्रेस*, *स्टेट्समैन* से जुड़कर उन्होंने बोफोर्स कांड उजागर किया।

मधु त्रेहान: मधु त्रेहान भारत की प्रख्यात महिला पत्रकार हैं जिन्होंने कोलंबिया विश्वविद्यालय से पत्रकारिता में मास्टर डिग्री लेने के बाद 1975 में '*इंडिया टुडे*' के अंग्रेजी संस्करण की नींव रखी। वे इसकी संस्थापक संपादक रहीं। 1986

में उन्होंने '*न्यूजट्रैक*' नाम की पहली वीडियो मैगजीन की शुरुआत कर खोजी पत्रकारिता के क्षेत्र में तहलका मचा दिया।

प्रभा दत्त: 1965 के भारत-पाक युद्ध में कवरेज करने वाली प्रथम महिला पत्रकार थीं जो अंग्रेजी अखबार *हिन्दुस्तान टाइम्स* के लिए कार्य करती थीं। नौकरी को लेकर उनकी अपने संपादक से भी लड़ाई चली।

इनके अतिरिक्त *मेरी सहेली* पत्रिका में साधना पाहवा, जूही वरुण पाहवा, प्रतिभा तिवारी, गीता शर्मा, उषा गुप्ता, पूनम नागेन्द्र शर्मा, कमला बडोनी जैसी महिला पत्रकारों ने पत्रकारिता के नवीन तकनीकी क्षेत्रों में भी सक्रिय भागीदारी निभाई है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में दूरदर्शन की नीलम शर्मा, निधि कुलपति, बरखा दत्त, रिचा अनिरुद्ध, मीमांसा मलिक, अनुराधा प्रसाद, श्वेता सिंह, अंजना ओम कश्यप, नेहा पंत, कादंबिनी शर्मा सहित अनेक नामों ने अपनी अलग छाप छोड़ी है।

5. महिला-केंद्रित पत्रिकाएँ और हिंदी पत्रकारिता का विस्तार

5.1 महिला पत्रिकाओं की परंपरा

स्वातंत्र्योत्तर भारत में पत्रकारिता के प्रचलित साधनों — रेडियो, टेलीविजन, समाचार पत्र, पत्रिका — ने महिलाओं के मुद्दों के प्रति जागृति फैलाकर उन्हें सशक्त बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। *धर्मयुग*, *साप्ताहिक हिन्दुस्तान*, *दिनमान*, *रविवार*, *कादम्बिनी*, *माधुरी*, *सरिता* जैसी पत्रिकाओं ने हिंदी पाठकों के बीच अच्छी पैठ बनाई। धीरे-धीरे *बालबोधिनी* की परंपरा में महिलाओं पर केंद्रित पत्रिकाओं की पहल हुई।

आज हिंदी में अनेक पत्रिकाएँ हैं जो महिलाओं की समस्याओं को समझकर उन पर तार्किक व विश्लेषणात्मक रवैया अपना रही हैं — जैसे *गृहलक्ष्मी*, *वनिता*, *मुक्ता*, *गृहशोभा*, *मेरी सहेली*, *सखी*, *मानुषी*, *अनसुया*, *जननी*। इन पत्रिकाओं ने अनेक महिला पत्रकारों को अवसर दिया है।

5.2 पत्रिकाओं में महिला पत्रकारों की भूमिका

सखी पत्रिका (जागरण समूह) की संपादक प्रगति गुप्ता हैं, जो विनीता कुमारी, गीतांजलि और वंदना अग्रवाल के सहयोग से अपने दायित्व का निर्वहन कर रही हैं। इस पत्रिका में व्यक्तित्व, साहित्य, सेहत, सौंदर्य, फैशन, रिश्ते, खानपान और अन्य विषयों पर महिला पत्रकारों ने व्यापक लेखन किया है। इससे स्पष्ट होता है कि महिला पत्रिका केवल कुछ ही बिंदुओं के इर्दगिर्द नहीं घूमती।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

वनिता पत्रिका (मलयाली मनोरमा प्रकाशन समूह) दो दशकों से भी अधिक पुरानी पत्रिका है। इसके माध्यम से रूबी मोहंती, निशा सिन्हा, निष्ठा गांधी आदि ने आधुनिक सामाजिक जीवनशैली की समालोचना प्रस्तुत करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। *गृहलक्ष्मी* में कविता देवगन, पूनम मेहता, ज्योति सोही, चयनिका निगम जैसी पत्रकारों ने स्वास्थ्य, समाज और स्त्री-विमर्श पर सक्रिय लेखन किया है।

'मेरी सहेली' पत्रिका ने अनेक महिलाओं को पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम बढ़ाने के अवसर दिए हैं। इस पत्रिका के संपादकीय प्रमुख, फूड एडीटर, कार्यकारी संपादक, सहायक कार्यकारी संपादक, फीचर संपादक, उपसंपादक, डिजिटल संपादक आदि पदों का दायित्व स्त्रियों ने संभाल रखा है।

5.3 विषय-विस्तार में महिला पत्रकारों की भूमिका

महिला पत्रकारों ने हिंदी पत्रकारिता की विषय-वस्तु को काफी विस्तृत किया है। सामान्यतः यह धारणा थी कि महिला पत्रिकाओं में मुख्य रूप से खान-पान, सौंदर्य, घरेलू हिंसा, दहेज-प्रताड़ना, बलात्कार, कन्या-भ्रूण हत्या आदि मामलों को ही महत्त्व दिया जाता है। किंतु आज महिला पत्रकारों ने इस सीमा को तोड़कर मानसिक स्वास्थ्य, किशोरावस्था, मातृत्व, वृद्धावस्था की देखभाल, लिव-इन रिलेशनशिप, यौनिकता, करियर, पर्यावरण, आत्मरक्षा, तकनीक और वेब संस्कृति जैसे ज्वलंत समकालीन मुद्दों को भी उठाया है। आज की महिला पत्रकार वृद्धावस्था की चिंता, बालमन की आधुनिक चुनौती, ओटीटी की सामाजिक मनोविज्ञान-दृष्टि आदि नवीन मुद्दों पर विचार प्रस्तुत करने लगी हैं।

6. स्त्री-विमर्श और सामाजिक चेतना

6.1 निजी से सार्वजनिक: स्त्री-प्रश्नों का परिवर्तन

महिला पत्रकारों का सबसे महत्त्वपूर्ण योगदान यह है कि उन्होंने 'निजी' समझे जाने वाले स्त्री-प्रश्नों को सार्वजनिक और राजनीतिक विमर्श में बदला। मासिक धर्म, भावनात्मक शोषण, मातृत्व का दबाव, वैवाहिक असमानता, पीरियड से जुड़े मिथक — इन सभी विषयों को भाषा देकर महिला पत्रकारों ने हिंदी पत्रकारिता को अधिक मानवीय और समावेशी बनाया।

मेरी सहेली पत्रिका के एक महत्त्वपूर्ण लेख 'रिश्तों में बढ़ता इमोशनल अत्याचार' में रिश्तों में बढ़ते खोखलेपन पर चर्चा की गई है। इसी प्रकार 'माँ से पहले मैं' लेख में माँ के 'स्व' के महत्त्व को रेखांकित किया गया है — ऐसे विषय जिन्हें पहले पत्रकारिता के योग्य नहीं माना जाता था।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

6.2 महिला पत्रकारिता और सामाजिक सुधार

महिला पत्रकारों ने समाज में प्रचलित रूढ़ियों और अंधविश्वासों के विरुद्ध भी सशक्त आवाज उठाई है। *वनिता* पत्रिका ने महिलाओं के स्वास्थ्य के साथ-साथ हमारे समाज में मौजूद अंधविश्वास एवं रूढ़ियों को तोड़ने, खेल क्षेत्र में लड़कियों की भागीदारी और सैनिटरी नैपकिन के प्रयोग जैसे मुद्दों को प्रस्तुत किया है। *गृहशोभा* पत्रिका में 'धार्मिक कट्टरवाद — खतरे में इंसानियत' जैसे निर्भीक लेख महिला पत्रकारिता की साहसिकता का प्रमाण हैं।

खबर लहरिया जैसे ग्रामीण अखबार ने, जिसे दलित और आदिवासी महिलाएँ 2002 से चला रही हैं, यह सिद्ध किया है कि महिला पत्रकारिता केवल शहरी और मध्यवर्गीय महिलाओं तक सीमित नहीं है।

7. मीडिया में महिलाओं का प्रतिनिधित्व: एक विश्लेषण

7.1 प्रिंट मीडिया में स्थिति

भारतीय मीडिया के सभी क्षेत्रों — प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक, वेब और पत्रिका — में महिलाओं का औसत प्रतिनिधित्व पुरुषों की तुलना में बेहद कम रहा है। एक महत्त्वपूर्ण मीडिया अध्ययन के अनुसार, आठ प्रमुख पत्रों के कुल 185 संस्करणों में मात्र 2 महिलाएँ ही संपादक के पद पर हैं — और वह भी केवल दैनिक *जागरण* में। भास्कर के कुल 65 संस्करणों में एक भी महिला संपादक का न होना एक चिंताजनक प्रश्न है। *हिन्दुस्तान*, *नवभारत टाइम्स*, *अमर उजाला* की तस्वीर भी बेहद असंतोषजनक है।

हिंदी प्रिंट मीडिया के करीब 237 वर्षों के सफरनामे में भी महिला संपादकों, लेखकों और पत्रकारों की संख्या अनुपात के हिसाब से नगण्य ही मानी जाएगी। मीडिया समूहों के जिम्मेदार मानते हैं कि उनके यहाँ कोई विषमता नहीं, सबको समान अवसर हैं — अगर महिलाएँ ही पहल न करें तो कौन दोषी है? यह तर्क सतह पर तर्कसंगत दिखता है, लेकिन इसके पीछे की सामाजिक और संस्थागत बाधाओं को नजरअंदाज करता है।

7.2 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में स्थिति

न्यूज चैनलों में महिला-पुरुष अनुपात अपेक्षाकृत ठीक कहा जा सकता है, किंतु यहाँ भी निर्णायक पदों पर अधिकांश पुरुषों का एकाधिकार है। महिलाओं को जो स्थान खबरिया चैनलों और FM रेडियो में मिला भी है, वह उनकी वैचारिक व बौद्धिक प्रखरता से कम, ग्लैमर और आकर्षण के कारण अधिक है। उनके ज्ञान, मेधा, समझ से कहीं ज्यादा उनका लुक, स्टाइल, वेशभूषा मायने रखती है। हालाँकि इसमें कुछ अपवाद हो सकते हैं।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

8. कार्यस्थल की चुनौतियाँ और महिला पत्रकारों का संघर्ष

महिला पत्रकारों को मीडिया के पुरुष-प्रधान इस पेशे में दोयम दर्जे का व्यवहार मिलता रहा। महिला पत्रकारों की प्रताड़ना, शोषण, अत्याचार के कई प्रकरण हैं जिनकी वजह से भी महिलाएँ इस जोखिम भरे पेशे में आने से कतराती हैं। आमतौर पर रात्रि की पाली में कार्य करने की असमर्थता भी उनके कैरियर में रोड़े अटकाती है। घर-गृहस्थी, परिवार, सुरक्षा जैसी भी कई चुनौतियाँ हैं।

टाइम्स ऑफ इंडिया में साठ के दशक में काम करने वाली वरिष्ठ पत्रकार उषा राय का प्रकरण अखबारी मानसिकता को दर्शाता है। वे आठ वर्ष तक लगातार काम करने वाली पहली महिला पत्रकार रहीं। जब उनका पहला बच्चा गर्भ में था, तब उन्होंने प्रसव-पूर्व अवकाश की माँग रखी। प्रबंधन की ओर से कहा गया कि उनके यहाँ इस तरह का कोई प्रावधान नहीं है। 1968 में मूल्यवृद्धि के विरोध में सुपर बाजार के सामने एक प्रदर्शन हो रहा था, जहाँ आठ माह की गर्भवती उषा राय को रिपोर्टिंग हेतु भेजा गया।

वरिष्ठ पत्रकार बाची काकरिया जब नौकरी माँगने *स्टेट्समैन* गई, तो यह कहकर उन्हें मना कर दिया गया कि संस्थान में महिला टॉयलेट नहीं है।

तहलका के पूर्व संपादक तरुण तेजपाल पर अपने ही संस्थान की एक महिला पत्रकार से यौन उत्पीड़न का केस चला। *इंडिया टीवी* की एंकर तनु शर्मा ने 22 जून 2014 को चैनल दफ्तर के बाहर जहर खाकर आत्महत्या की कोशिश की। उनके बयान ने एक बार फिर मीडिया बिरादरी को शर्मसार किया।

अंतर्राष्ट्रीय न्यूज सेफ्टी इंस्टीट्यूट और इंटरनेशनल वीमेन मीडिया फाउंडेशन ने दुनियाभर की 875 महिला पत्रकारों के साथ सर्वे किया। सर्वे के मुताबिक करीब दो-तिहाई महिला मीडियाकर्मियों ने काम के सिलसिले में धमकी और बदसलूकी झेली है। ज्यादातर मामलों में जिम्मेदार पुरुष सहकर्मी थे। वरिष्ठ पत्रकार पमेला फिलिपोज के मुताबिक भारत में यह खतरा कहीं ज्यादा है।

9. आलोचनात्मक दृष्टि: सीमाएँ और चुनौतियाँ

महिला पत्रकारों के योगदान के बावजूद कुछ सीमाएँ अवश्य हैं, जिनका आत्मालोचनात्मक उल्लेख आवश्यक है।

बाजारवाद का प्रभाव: महिला-केंद्रित पत्रिकाओं के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि स्वास्थ्य और सौंदर्य संबंधी अधिकांश लेखों में परोक्ष रूप से भूमंडलीकरण से पनपी बड़ी कंपनियों के उत्पादों के लाभ का गुणगान मिलता है। सौंदर्य, फैशन और उपभोक्ता उत्पादों पर अत्यधिक जोर देने से गंभीर सामाजिक प्रश्न पृष्ठभूमि में चले जाते हैं।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

असमान प्रतिनिधित्व: महिला पत्रिकाओं में ग्रामीण, आदिवासी, दलित, अल्पसंख्यक और थर्ड जेंडर के प्रश्न प्रायः नदारद नजर आते हैं। ये पत्रिकाएँ अधिकतर शहरी मध्यवर्गीय महिलाओं तक सीमित रहती हैं।

भाषाई असंगति: महिला पत्रिकाओं की भाषा अंग्रेजी-मिश्रित हिंदी के रूप में सामने आती है, जो हिंदी की देशजता को कमजोर करती है।

10. वर्तमान परिदृश्य और भविष्य की संभावनाएँ

आज हिंदी पत्रकारिता प्रिंट, डिजिटल, यूट्यूब, पॉडकास्ट और सोशल मीडिया जैसे बहुविध मंचों पर फैली हुई है। इस नए परिदृश्य ने महिला पत्रकारों के लिए अवसरों का विस्तार किया है। खबर लहरिया जैसे ग्रामीण महिला मीडिया संगठनों ने सिद्ध किया है कि महिला पत्रकारिता केवल बड़े शहरों और महानगरों में नहीं, ग्रामीण हाशियों पर भी फल-फूल रही है।

महिलाओं ने न केवल रिपोर्टिंग बल्कि फोटोग्राफी, नृत्य निर्देशन, डिजिटल संपादन और नए मीडिया के क्षेत्र में भी सक्रिय भागीदारी निभाई है।

भविष्य की हिंदी पत्रकारिता में महिला पत्रकारों की भूमिका और अधिक निर्णायक हो सकती है, बशर्ते उन्हें समान अवसर, सुरक्षित कार्यस्थल, संपादकीय नेतृत्व, संस्थागत समर्थन और उचित प्रतिनिधित्व मिले। यह आवश्यक है कि महिला पत्रकारिता को केवल 'महिला पृष्ठ' या 'लाइफस्टाइल' तक सीमित न किया जाए। महिला पत्रकार राजनीति, अर्थव्यवस्था, ग्रामीण संकट, पर्यावरण, न्यायपालिका, विज्ञान, श्रम, शिक्षा और सार्वजनिक नीति जैसे क्षेत्रों में भी समान अधिकार से हस्तक्षेप करें — तभी हिंदी पत्रकारिता का लोकतांत्रिक चरित्र और मजबूत होगा।

11. निष्कर्ष

हिंदी पत्रकारिता में महिला पत्रकारों का योगदान बहुआयामी, ऐतिहासिक और परिवर्तनकारी है। हेमंत कुमारी देवी की *सुगृहिणी* से लेकर मृणाल पांडे, चित्रा सुब्रमण्यम, मधु त्रेहान, नीरजा चौधरी और आज की डिजिटल महिला पत्रकारों तक — यह यात्रा स्त्री-अस्तित्व की दृढ़ता, बौद्धिक क्षमता और सामाजिक प्रतिबद्धता की यात्रा है।

महिला पत्रकारों ने हिंदी पत्रकारिता को केवल सूचना-माध्यम नहीं रहने दिया; उसे समाज-सुधार, जागरूकता, स्त्री-अधिकार, जनसंवाद और लोकतांत्रिक विमर्श का सक्रिय मंच बनाया। यद्यपि प्रतिनिधित्व, सुरक्षा, नेतृत्व और बाजारवाद जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, तथापि यह निर्विवाद है कि हिंदी पत्रकारिता का वर्तमान स्वरूप महिला पत्रकारों के योगदान के बिना अधूरा है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

आवश्यकता इस बात की है कि महिला पत्रकारों के योगदान को इतिहास, पाठ्यक्रम, मीडिया-अध्ययन और सार्वजनिक विमर्श में यथोचित स्थान दिया जाए। इससे न केवल पत्रकारिता अधिक समावेशी बनेगी, बल्कि लोकतंत्र भी अधिक प्रतिनिधि और न्यायपूर्ण होगा।

संदर्भ-सूची

1. मेहता, आलोक. (2015). *भारत में पत्रकारिता*. नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास. पृ. 57.
2. जाट, ज्ञानी कुमारी. (2021). "महिला पत्रकारिता: महिला केन्द्रित पत्रिकाओं का एक अध्ययन". *अपनी माटी*, अंक-37, जुलाई-सितम्बर, ISSN 2322-0724, UGC Care Listed.
3. द्विवेदी, डॉ. आशीष. (2017). "भारतीय मीडिया में महिलाओं का प्रतिनिधित्व और चुनौतियाँ". *मीडिया मीमांसा*, जुलाई-सितम्बर 2017. माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल. पृ. 50–57.
4. गोयनका, कमल किशोर. (2020). *गांधी: पत्रकारिता के प्रतिमान*. नई दिल्ली: सस्ता साहित्य मंडल प्रकाशन. पृ. 148.
5. खाँ, आसीन. (2016). "भारत में महिला, दलित और अल्पसंख्यकों की समस्याएँ: मीडिया की भूमिका". *मीडिया: अतीत, वर्तमान और भविष्य*. नई दिल्ली: नटराज प्रकाशन. पृ. 125.
6. बघेल, संजय कुमार. (2016). *विज्ञापन और ब्रांड*. नई दिल्ली: सस्ता साहित्य मंडल. पृ. 39.
7. शुक्ल, सुधा. *महिला पत्रकारिता*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
8. श्री, माधवी. *महिला पत्रकारों की संघर्ष गाथा*. (मीडिया संदर्भ, दैनिक भास्कर, 23 नवम्बर 2014).
9. वाजपेयी, सुमन. "महिलाओं का मीडिया मोर्चा". *सहारा समय*, अप्रैल 2003.
10. अखिलेश्वरी, आर. "Women Journalists in India: Swimming Against the Tide". (मीडिया मीमांसा संदर्भित).
11. मोहन, अरविंद. *पत्रकारिता शिक्षण और प्रशिक्षण*. नई दिल्ली: मीडिया अध्ययन केंद्र.
12. उतिष्ठ भारत. (2024, 2 अप्रैल). "भारत की पहली महिला पत्रकार हेमन्त कुमारी देवी चौधरानी". [ऑनलाइन]. https://utisthbharat.com/indias-first-female-journalist-hemant-kumari-devi-choudharani/

ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 3
Special Issue: 1
June: 2026

13. जंजवार संवाददाता. (2020). "भारत की वो 10 बहादुर महिला पत्रकार". *जंजवार*. https://janjwar.com
14. फेमिनिज्म इन इंडिया (हिंदी). (2022). "हेमंत कुमारी देवी: हिंदी पत्रकारिता की पहली महिला पत्रकार". https://hindi.feminisminindia.com/2022/06/01/hemant-kumari-devi-profile-hindi/
15. UN Geneva. (2026, 7 फरवरी). "From Rural Margins to Media Trailblazers: India's Women Journalists Are". *UN Geneva News*. https://www.ungeneva.org/en/news-media/news/2026/02/115660/
16. Journal CRA. "Pioneer Women Journalists in India". *Journal of Current Research in Applied Sciences*, DOI: 10.24941/ijcr. https://journalcra.com/article/pioneer-women-journalists-india
17. NSS Research Journal. "पत्रकारिता में स्त्री विमर्श: मुख्यधारा मीडिया और महिला आवाज़". https://www.nssresearchjournal.com/current-edition-details/NSS9155
18. Shodhganga, INFLIBNET. "हिंदी पत्रकारिता और महिला प्रतिनिधित्व". http://shodhganga.inflibnet.ac.in/handle/10603/401805
19. सोही, ज्योति. "सर्दियों में कुछ इस तरह रखें बुजुर्गों का ख्याल". *गृहलक्ष्मी*, फरवरी 2021. पृ. 49.
20. पंकज, गरिमा. "जिंदगी की बाजी जीतने के 15 सबक". *गृहशोभा*, फरवरी 2021. पृ. 13.